International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 13-02-2026, Accepted: 15-03-2026, Published: 30-03-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 31-33

हीरा प्रसाद ठाकुर रचित भोजपुरी काव्यों में भोजपुरी लोक संस्कृति का चित्रण

संजय कुमार
शोधार्थी, भोजपुरी विभाग, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा, भोजपुर, बिहार, भारत

सारांश
हीरा प्रसाद ठाकुर भोजपुरी साहित्य जगत के बहुत बड़े साहित्यकार थे। उन्होने कुल 126 पुस्तकों का रचना कर साहित्य जगत मे कीर्तिमान स्थापित किए है। उनका लेखनी भोजपुरी के साथ–साथ हिन्दी भाषा मे भी खूब चला है। ठाकुर जी चूँकि ग्रामीण परिवेश मे पले–बढ़े थे।उनका जीवन बहुत संघर्ष मे बीता था। अपने सभी 126 रचनाओं मे सबसे अधिक उन्होने पद्य विधा मे रचना किया है।उनके पद्य विधा के सभी काव्यो मे भोजपुरी लोक संस्कृति का उदाहरण देखने को मिलता है। चूंकि वह जो देखते थे, उसी का यथार्थ चित्रण अपने काव्यो मे करते थे। उनके काव्यो मे भोजपुरी लोक संस्कृति का बखूबी चित्रण हुआ है।

मूल शब्दः लोक, संस्कृति, गाँव, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सभ्यता, राष्ट्रीय ।

समग्र रुप से 'लोक' शब्द का प्रयोग उस जनसमूह के लिए किया जाता है, जो साज–सज्जा, ऊपरी दिखावा, सभ्यता एवं शिक्षा आदि से दूर आदिम मनोवृत्तियों से युक्त होता हैं। लोगो द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होने वाली परंपरा या संस्कार को ही 'लोक संस्कृति' कहते है। लोक संस्कृति का कोई स्वरूप नही होता है। इसमे धर्म, साहित्य, संगीत, लोकगाथाओं, तथा विश्वासो के प्रशिक्षण को ही महत्वपूर्ण माना जाता हे। प्रत्येक व्यक्ति अपने आस–पास, परिवार अथवा अनौपचारिक समूहों से इनकी मौखिक सीख प्राप्त करता है। लोक जीवन के पग–पग पर लोक संस्कृति के दर्शन होते है। लोक संस्कृति उतना ही पुराना है, जितना कि मानव। भारत एक कृषि प्रधान देश है और भारतीय लोक संस्कृति मूलतः कृषि समाज से ही जुड़ी हुई है। ग्रामीण समाज मे अधिकांश कार्य, उत्सव, मेले और हाट, पूजा–पाठ, ग्रामीण देवी–देवता की पूजा, लोक नृत्य और लोकगीत आदि कृषि क्षेत्र से ही संबंधित है। किसी भी देश के समृद्ध इतिहास को जानने के लिए वहाँ के लोगो की बोली, रहन–सहन, पहनावा, रिति–रिवाज जानना जरूरी होता है, उसके लिए लोक संस्कृति को जानना आवश्यक है

भोजपुरी विश्व मे सबसे अधिक बोली जाने वाली लोकभाषा है। भोजपुरी लोक संस्कृति का इतिहास गौरवशाली रहा है। आज भारत ही नही, अपितु विश्व के बहुत से देशो मे भोजपुरी संस्कृति को अपनाया जा रहा है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण बिहार, उतरप्रदेश का लोकपर्व 'छठ पूजा' काश्मीर से केरल और महाराष्ट्र से असम तक मनाया जा रहा है।यही नही विश्व के विकसित देशो सहित अन्य देशो मे भी सूर्योपासना का पर्व अन्य धर्मो के लोगो द्वारा भी मनाया जा रहा है। भारत अपनी महान ऐतिहासिक संस्कृति के कारण ही कभी विश्वगुरु रहा है। आज सम्पूर्ण विश्व हमारी संस्कृति के धरोहर 'योग' को अपनाकर योग दिवस मना रहा है।

लोक संस्कृति की बात हो और भोजपुरी भाषा की बात न हो तो यह लोक संस्कृति के साथ बेइमानी होगा। भोजपुरी लोक साहित्य अपने आप मे महान है। तुलसी, कबीर, रहिम सहित मुंशी प्रेमचंद, राहुल सांकृत्यायन जैसे साहित्यकार भी भोजपुरी लोक साहित्य से अछूते नही रहे और वे सभी विद्वान हिन्दी साहित्यकार के रुप मे नाम कमाने के बावजूद भोजपुरी लोक साहित्य को अपने अंदर समाहित कर लोक संस्कृति को जीवंत रखा है। भोजपुरी साहित्यकारों ने भी अपनी अपनी रचनाओं मे लोक संस्कृति का बखूबी पहचान दिया है। किसी भी लोक साहित्य का पहचान लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकपर्व से ही होता है। ये सभी लोक संस्कृति का ही हिस्सा होते है।भोजपुरी साहित्यकारो के रचनाओ मे लोक संस्कृति कूट–कूट कर भरा रहता है। भोजपुरी लोक साहित्यकारो मे 'हीरा प्रसाद ठाकुर' एक ऐसे सितारे के रुप मे है, जिन्होने साहित्य के सभी विधाओं मे 126 पुस्तको का रचना कर लोक साहित्य के इतिहास मे एक मिसाल पैदा किया है। उन सभी 126 रचनाओं मे हीरा प्रसाद ठाकुर जी ठेठ भोजपुरी लोक संस्कृति का बहुत ही सुंदर से चित्रण किया है। अपनी रचनाओं मे ठाकुर जी द्वारा लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकपर्व, भक्ति गीत आदि का सुन्दर वर्णन किया गया है। हीरा प्रसाद ठाकुर जी के कुल 126 रचनाओ मे 80 पद्ध काव्य है और वे सभी काव्य धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राष्ट्रीय परिपेक्ष्य मे रचित है।वे अपने सभी काब्य रचनाओं मे भारतीय लोक संस्कृति का सुन्दर चित्रण करते हुए भारतीय संस्कृति को उद्धेलित किया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य जीवन लोक संस्कृति से परिपूर्ण होता है, जो पीढी दर पीढी आगे बढता रहता है। आज जहां विश्व के अधिकतम देश अपने लोक संस्कृति को खोने के कगार पर है, वही हमारे देश मे भोजपुरी लोक संस्कृति को आगे बढाने का कार्य हीरा प्रसाद ठाकुर जैसे साहित्यकारो ने बेखुबी करने का कार्य किए है। ठाकुर जी के रचनाओं मे गाँव की सोंधी मिट्टी का गंध मिलता है जो लोक संस्कृति के रक्षक और विकसित करने का प्रमाण है। आज जरूरत है अपनी लोक संस्कृति को संजोकर रखने का जिसे आने वाली पीढ़ी उसे ग्रहण कर भारत को फिर से एकबार विश्वगुरू बनाएँगे।

भारत एक महान देश है और इसकी महानता भारतीय संस्कृति से है।भारतीय संस्कृति लोक संस्कृति से ही जिवंत है। भोजपुरी लोक संस्कृति अपने धार्मिक, सामाजिक, परिवारिक और आर्थिक अवसरो पर किए जाने वाले कार्यो और उसके तरीके पर निर्भर करता है। भोजपुरी लोक गीतो मे आज फूहड़पन, असामाजिक तत्वों का समावेश होता दिख रहा है। धीरे–धीरे लोग आधुनिकता को जोर से पकड़ने के होड़ में शामिल होकर अपनी सभ्यता, संस्कृति और परंपरा को पीछे छोड़ते जा रहे है। गाँवो मे विभिन्न अवसरो पर गाए जाने वाले लोकगीतों मे हिन्दी फिल्मी गीतो का स्थान ले रहा है। लोक संस्कृति तभी समृद्ध होगा जब उसके लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा और लोकनाटक जिवंत हो। भले आधुनिकता को ग्रहण करना समय के अनुसार अच्छी बात है,

परंतु हमारी सभ्यता और संस्कृति तभी जिंदा रह सकते है, जब हम अपनी परंपरा को जिवंत रखे।

आज के लोक साहित्यो मे लोक तत्वों की कमी आ रही है, लेकिन हमारे भोजपुरी लोक साहित्यकारों मे ऐसे बहुत से साहित्यकार हुए या अभी है, जो लोकतत्व की महता को समझते हुए अपनी पीढ़ी के लिए लोक संस्कृति के झंडे को बुलंद किए हुए है। ऐसे ही भोजपुरी लोक साहित्य मे एक हीरे की तरह चमकता हुआ सितारा 'हीरा प्रसाद ठाकुर' हुए जिन्होने अपनी कुल 127 रचनाओं मे लोक संस्कृति को जिवंत रखा है।अपने सभी पद्ध काब्यो मे हीरा प्रसाद ठाकुर लोक संस्कृति का बहुत ही सुन्दर चित्रण किए है। उनकी रचनाओं मे भारतीय लोक संस्कृति की पहचान जन्म के समय गाएं जाने वाले गीत, सोहर, खेलावन उसके बाद विवाह के सारे रस्म के लोकगीत, श्रम गीत, भजन, त्योहार गीत आदि को उचित स्थान मिला है।

भोजपुरी लोकसंस्कृति मे भजन का भी बहुत महत्व है। सुबह और शाम भगवान के ध्यान मे लोग भजन गाते है जो हमारी लोक संस्कृति मे एक विशेष स्थान रखता है। ठाकुर जी अपने पुस्तक 'अनमोल रतन' मे प्रातःकाल भजन का का रचना करते हुए 'भगवान राम' जो हमारी भारतीय संस्कृति का धरोहर है का सुन्दर चित्रण करते हुए लिखे है.. 'प्रात काल उठि मज लें राम, राधे श्याम जय–जय श्री राम।'[1]

वैसे ही उन्होने अपने रचनाओं मे माँ गंगा, मर्यादा पुरूषोत्तम राम, सभी नौ देवियो के साथ ब्रह्मा, विश्नु, शंकर सहित सभी देवताओं का वंदन करते हुए अपनी संस्कृति को सुन्दर रुप से दर्शाया है। जन्म के साथ ही मनुष्य का संस्कार का उदय होने लगता है और पहला संस्कार बच्चो को अपने माता–पिता से मिलता है।जन्म के साथ ही हमारे लोक संस्कृति का शुभारंभ होते हुए सोहर, खेलावन आदि लोकगीतो के साथ संस्कार भरना शुरू हो जाता है। हीरा प्रसाद ठाकुर अपने विभिन्न रचनाओं मे सोहर और खेलावन का चित्रण किए है। उन्ही के द्वारा लिखा लोकगीत सोहर..

'प्रेमवा के दिअरा जराइबि कि मइया के देखाइबि नू हो।गीतिये से मइया के रिझाइबि, कि टोकुली सजाइबि नू हो, ए मइया हो।।'वैसे ही अपने रचना मे खेलावन का चित्रण किए है जिसके कुछ पंक्ति इस प्रकार है३

'झुम–झुम के आरती उतरली धनेसरा, चुन–चुन के अच्छत चढ़वली हो लाल।
हीरा के सोहर खेलावना बनावल, रून–झुन के पायल बजवली हो लाल।।'

'आ गइलें लाला, मोर अंगना।आ..
ब्रह्मा भी अइलें, विष्णु भी अइलें,
शिवजी के हाला, मोर अंगना।'

भोजपुरी लोक संस्कृति का एक पहचान शादी–विवाह मे होने वाले विभिन्न अवसर जैसे छेका, तिलक, मड़वान, हल्दी, परछावन, विवाह, कोहबर के लोकगीत प्रसिद्ध है। इन लोकगीतों के माध्यम से उत्सवो को जिवंत रखा जाता है।आज भी भी भोजपुरी लोक संस्कृति मे ये सभी विधि–विधान संपन्न होते है और महिलाएँ गीत गा कर उत्व मनाते है। ठाकुर जी ने भी अपने रचनाओं मे उपरोक्त सभी विधि–विधान को ध्यान मे रखते हुए अपने पुस्तको मे लोकगीतों का चर्चा किए है।उन्ही लोकगीतों मे कुछ महत्वपूर्ण पंक्तियां है..'बबुआ तू जा जल्दी–जल्दी, पापाजी ना अनलें हल्दी।

हल्दी बिनु लागे अकरावन, देखत लागे ना मनभावन'
द्वार छेंकाई के गीत– 'सोने के पलकिया चढ़िके, दुलहा अउर दुलहिन अइलें, नाउन मांगेली उतराई जी'।

विवाह उत्सव का अंतिम समय बहुत ही मार्मिक होता है, जब बेटी अपने माता–पिता के घर से विदा हो कर सुसुराल जाने के लिए तैयार होती है। भोजपुरी लोक संस्कृति मे इसका अलग महत्व है। ठाकुर जी अपने रचना मे लोकगीत के माध्यम से बताएँ है जिसका कुछ पंक्तियां निम्न है..

'बेटी चले ससुरार, अंगना में रोवे लगली मइया।
आहे अंगना मे३..।बेटी३इहे बेटी रही हमरो, जिगर के टुकड़वा'

ऐसे ही विवाह– उत्सव के दौरान भोजपुरी लोक संस्कृति मे गाली का भी महत्व है। हीरा प्रसाद ठाकुर अपने रचनाओ मे भोजपुरी लोक संस्कृति का ऐसा कोई भी आयाम नही है, जिसे उन्होने स्थान न दिया हो। लोक संस्कृति की परंपरा को आगे बढाते हुए विभिन्न त्योहारो और पर्वो का भी अपने रचना मे सुन्दर चित्रण किए है। हमारी भारतीय संस्कृति का पहला कैलेंडर महिना फाल्गुन होता है और नव वर्ष का स्वागत फाल्गुन के लोकगीत से होता है। इसी प्रकार चौता, कजरी, बारहमासा के अलावा विभिन्न पर्व होली, रक्षा बंधन, दशहरा, दिपावली, भैया दूज और महा पर्व छठ मनाने का परंपरा रहा है और उक्त अवसरो पर विभिन्न पाकवान बनते है और लोकगीतो के माध्यम से इसे जीवंत रखा जाता हैं। हीरा प्रसाद ठाकुर जी ने अपने काव्यो मे इन पर्वो का लोकगीत के माध्यम से सुन्दर चित्रण किए है।

'कतो फाग झुमे, अपने मद में
कहे ना बड़ कोऊ इहाँ हमसे
तबे चौत्र हुमाचिके आई गयो
बोले फाग बड़ा हमसे कबसे।'

हीरा प्रसाद ठाकुर जी के काव्य पाठो मे भोजपुरी लोक संस्कृति का सभी उदाहरण देखने को मिल जाएगा। पर्व, त्योहार, उत्सव, संस्कार के साथ उनके रचनाओं मे भोज्य पदार्थों का भी वर्णन मिल जाता है। भोजपुरी लोक संस्कृति मे 'लिटी– चोखा' भोजन का बहुत ही अधिक महत्व है जो आज देश ही नही विदेशो मे भी लोकप्रिय हो चुका है। लिट्टी–चोखा पर भी कविता उनके काव्यो मे देखने को मिल जाएगा।

भोजपुरी लोक संस्कृति विश्वस्तरीय लोक संस्कृति है।आज विश्व के लगभग 16 देशो मे भोजपुरी लोक संस्कृति के लोग रहते है जो अपने परंपराओं को जिंदा रखते हुए अन्य धर्म और विदेशियो को भी अपने संस्कृति से प्रभावित किए है। यही कारण है कि बिहार और उतरप्रदेश मे मनाएँ जाने वाला छठ महापर्व आज विदेशो मे भी उसी परंपरा से मनाया जाता है।

निष्कर्ष

भोजपुरी साहित्यकारो ने अपने पुस्तको मे लोक तत्वो को उचित स्थान दे कर अपने लोक संस्कृति को जिन्दा रखा है। हीरा प्रसाद ठाकु जी जैसे विरले साहित्यकार होते है, जिन्होने बहुत ही कम समय मे आर्थिक स्थिति सही नही होने के बावजूद लोक संस्कृति को अपने काव्यो मे संजोकर रखा। ठाकुर जी की ऐसी कोई रचना नही है, जिसमे उन्होने भोजपुरी लोक संस्कृति का चित्रण नही किया है। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि आने वाली पीढ़ी उनके रचनाओं का अध्ययन कर अपने लोक संस्कृति को आगे बढाने का कार्य करेंगे।

संदर्भ सूची

1. हीरा प्रसाद ठाकुर (2010)'अनमोल रतन' अनिल कुमार, राज कुमार प्रकाशन, आरा

2. हीरा प्रसाद ठाकुर (2009) 'चटक–मटक' अनिल कुमार, राज कुमार प्रकाशन आरा
3. हीरा प्रसाद ठाकुर (2009) 'धूम–धड़ाका', अनिल कुमार, राज कुमार प्रकाशन, आरा
4. हीरा प्रसाद ठाकुर (2008) 'हीरा के पीरा', अनिल कुमार, राज कुमार प्रकाशन, आरा
5. हीरा प्रसाद ठाकुर (2009) 'हीरा के जलजीरा', अनिल कुमार, राज कुमार प्रकाशन, आरा